श्रीदत्त द्वितीय

जीवन-परिचय : श्रीदत्त द्वितीय वे आचार्य हैं जो दार्शनिक विद्वान के रूप में लोकप्रसिद्ध रहे हैं। वे दीप्तिमान, तपस्वी और तीन सौ तिरेसठ वादियों के विजेता थे। साथ ही ये शब्दशास्त्र में निपुण, प्रसिद्ध वैयाकरण आचार्य भी रहे हैं।

श्रीदत्त द्वितीय का समय पाँचवीं शताब्दी माना जाता है।

रचना-परिचय : श्रीदत्त द्वितीय के द्वारा लिखित एक ग्रन्थ 'जल्पनिर्णय' का परिचय मिलता है।

1. जल्पनिर्णय : यह ग्रन्थ जय-पराजय की व्यवस्था का निर्णय करनेवाला ग्रन्थ है। 'न्यायसूत्र' ग्रन्थ में जिन सोलह पदार्थों के तत्त्वज्ञान से मोक्ष माना गया है, उनमें वाद, जल्प और वितंडा भी तीन पदार्थ माने गये हैं। आचार्य श्रीदत्त ने जल्प का निर्णय करने के लिए यह 'जल्पनिर्णय' ग्रन्थ लिखा है। श्रीदत्त आचार्य वाद शाखा के विशेष विद्वान पंडित माने जाते हैं।